VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 37

व्यंग्य

रेल यात्रा

रेलों का काम एक जगह से दूसरी जगह जाना है। यात्री की जो भी दशा हो - जिन्दा रहे या मुर्दा, भारतीय रेलों का काम उसे पहुंचा देना भर है। अरे, जिसे जाना है वह तो जाएगा। बर्थ पर लेटकर जाएगा, पैर पसारकर जाएगा। जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किसिम के बल हैं, उसे यात्रा करने से कोई नहीं रोक सकता।

■ **शरद जोशी**

रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं। ठीक कहते हैं। रेलें हमेशा प्रगति करती हैं। वे मुंबई से प्रगति करती हुई दिल्ली तक चली जाती हैं और वहां से प्रगति करती हुई मुंबई तक आ जाती हैं। अब यह दूसरी बात है कि वे बीच में कहीं भी रुक जाती हैं और लेट पहुंचती हैं। पर अब देखिए ना, प्रगति की राह में रोड़े कहां नहीं आते। कांग्रेस के रास्ते में आते हैं, देश के रास्ते में आते हैं तो यह तो बिचारी रेल है। आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं तो किसी डिब्बे में घुस जाइए। बिना गहराई में घुसे आप सच्चाई को महसूस नहीं कर सकते।

हमारे यहां कहा जाता है - 'ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें।' आप पूछ सकते हैं कि इस छोटी-सी रोजमर्रा की बात में ईश्वर को क्यों घसीटा जाता है? पर जरा सोचिए, रेल की यात्रा में ईश्वर के सिवा आपका है कौन? एक वही तो है जिसका नाम लेकर आप भीड़ में जगह बनाते हैं। भारतीय रेलों में तो यह है, आत्मा सो परमात्मा और परमात्मा सो आत्मा! अगर ईश्वर आपके साथ है, टिकट आपके हाथ है, पास में सामान कम और जेब में पैसा ज्यादा है तो आप मंजिल तक पहुंच जाएंगे, फिर चाहे बर्थ मिले या न मिले। अरे भारतीय रेलों का काम तो कर्म करना है। फल की चिंता वह नहीं करती।

रेलों का काम एक जगह से दूसरी जगह जाना है। यात्री की जो भी दशा हो - जिन्दा रहे या मुर्दा, भारतीय रेलों का काम उसे पहुंचा देना भर है। अरे, जिसे जाना है वह तो जाएगा। बर्थ पर लेटकर जाएगा, पैर पसारकर जाएगा। जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किसिम के बल हैं, उसे यात्रा करने से कोई नहीं रोक सकता।

वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं। ट्रेन स्टार्ट हो जाती है और वे सामान लिये दरवाजे के पास खड़े रहते हैं। भारतीय रेलें हमें जीवन जीना सिखाती हैं। जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ। अगर आप यह सब कर सकते हैं तो अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं। भारतीय रेलें तो साफ कहती हैं - जिसमें दम, उसके हम। आत्मबल चाहिए, मित्रो!

जब रेलें नहीं चली थीं, यात्राएं कितनी कष्टप्रद थीं। आज रेलें चल रही हैं, यात्राएं फिर भी इतनी कष्टप्रद हैं। यह कितनी खुशी की बात है कि प्रगति के कारण हमने अपना इतिहास नहीं छोड़ा। दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है। ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं। ये न हमारा चरित्र बदल सकती हैं और न भाग्य।

भारतीय रेलों ने एक बात सिद्ध कर दी है कि बड़े आराम की मंजिलें छोटे आराम से तय होती हैं। और बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है। जैसे आप ससुराल जा रहे हैं। महीने-भर

VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 38

वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं। ट्रेन स्टार्ट हो जाती है और वे सामान लिये दरवाजे के पास खड़े रहते हैं। भारतीय रेलें हमें जीवन जीना सिखाती हैं। जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ। अगर आप यह सब कर सकते हैं तो अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं। भारतीय रेलें तो साफ कहती हैं – जिसमें दम, उसके हम। आत्मबल चाहिए, मित्रो!

पहले आरक्षण करा लिया है, घंटा भर पहले स्टेशन पहुंच गये हैं, बर्थ पर बिस्तर फैला दिया है और रेल उस दिशा में दौड़ने लगी है जिस दिशा में आपका ससुराल है। ससुराल बड़ा आराम है, आरक्षण छोटा आराम है। बड़े आराम की मंजिल छोटे आराम से तय होती है।

इसी तरह बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है। मानिए आपके बाप मर गये। (माफ कीजिए, मैं एक उदाहरण दे रहा हूं। भगवान उनकी लंबी उमर करे अगर वे पहले ही न मर गये हों तो।) आप खबर सुनते हैं और अपने गांव जाने के लिए फौरन रेल में चढ़ जाते हैं। भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज। आप सब-कुछ सहन करते खड़े हैं। पिताजी जो मर गये हैं। बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है।

मैं एक दूसरा उदाहरण देता हूं। मानिए एक कुंवारे लड़के को उसका दोस्त कहता है कि जिस लड़की से तुम्हारी शादी की बात चल रही है वह होशंगाबाद अपने मामा के घर आयी है, देखना चाहो तो फौरन जाकर देख आओ। आरक्षण का समय नहीं है। कुंवारा लड़का न आव देखता है न ताव और रेल के डिब्बे में चढ़ जाता है। वही भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज। मगर क्या करे? लड़की से शादी जो करनी है, जिन्दगी-भर के लिए मुसीबत जो उठानी है। बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है।

भारतीय रेलें चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती हैं। प्राचीन मनीषियों ने कहा है कि जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है। क्यों भैया? पृथ्वी से स्वर्ग तक या

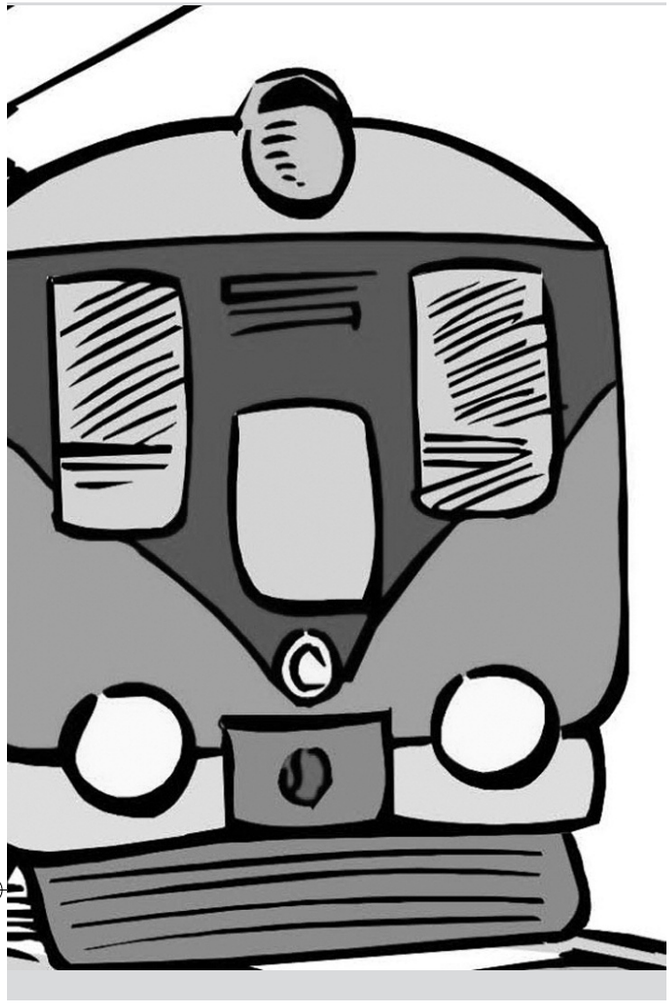

नरक तक भी रेलें चलती हैं। जाने वालों की भीड़ बहुत ज्यादा है। भारतीय रेलें भी हमें यही सिखाती हैं। सामान रख दोगे तो बैठोगे कहां? बैठ जाओगे तो सामान कहां रखोगे? दोनों कर दोगे तो दूसरा कहां बैठेगा? वो बैठ गया तो तुम कहां खड़े रहोगे? खड़े हो गये तो सामान कहां रहेगा? इसलिए असली यात्री वो जो हो खाली हाथ। टिकट का वजन उठाना भी जिसे कुबूल नहीं।

प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ये स्थिति मरने के बाद बतायी है। भारतीय रेलें चाहती हैं वह जीते-जी आ जाए। चरम स्थिति, परम हल्की अवस्था, खाली हाथ, बिना बिस्तर, मिल जा बेटा अनंत में! सारी रेलों को अन्ततः ऊपर जाना है।

टिकट क्या है? देह धरे को दंड है। मुंबई की लोकल ट्रेन में, भीड़ से दबे, कोने में सिमटे यात्री को जब अपनी देह तक भारी लगने लगती है, वह सोचता है कि यह शरीर न होता, केवल आत्मा होती तो कितने सुख से यात्रा करती। भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं। कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहां उतरेगा? अस्पताल में या श्मशान में। लोग रेलों की आलोचना करते हैं। अरे रेल चल रही है और आप उसमें जीवित बैठे हैं, यह अपने में कम उपलब्धि नहीं है।

रेल-यात्रा करते हुए अक्सर हम विचारों में डूब जाते हैं। विचारों के अतिरिक्त वहां कुछ डूबने को होता भी नहीं। रेल कहीं भी खड़ी हो जाती है। खड़ी है तो बस खड़ी है। जैसे कोई औरत पिया के इंतजार में खड़ी हो। उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं। यह जंगल में खड़ी पता नहीं किसका इंतजार कर रही है। खिड़की से चेहरा टिकाये हम सोचते रहते हैं। पास बैठा यात्री पूछता है - 'कहिए साहब, आपका क्या खयाल है, इस कंट्री का कोई फ्यूचर है कि नहीं?'

'पता नहीं।' आप कहते हैं, 'अभी तो ये सोचिए कि इस ट्रेन का कोई फ्यूचर है कि नहीं?'

फिर एकाएक रेल को मूड आता है और वह चल पड़ती है। आप हिलते-डुलते, किसी सुंदर स्त्री का चेहरा देखते चल पड़ते हैं। फिर किसी स्टेशन पर वह सुंदर स्त्री भी उतर जाती है। एकाएक लगता है सारी रेल खाली हो गयी। मन करता है हम भी उतर जाएं। पर भारतीय रेलों में आदमी अपने टिकट से मजबूर होता है। जिसका जहां का टिकट होगा वह वहीं तो उतरेगा। उस सुन्दर स्त्री का यहां का टिकट था, वह यहां उतर गयी। हमारा आगे का टिकट है, हम वहां उतरेंगे।

भारतीय रेलें कहीं न कहीं हमारे मन को छूती हैं। वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं। एक ऊंघता हुआ यात्री दूसरे ऊंघते हुए यात्री

मुंबई की लोकल ट्रेन में, भीड़ से दबे, कोने में सिमटे यात्री को जब अपनी देह तक भारी लगने लगती है, वह सोचता है कि यह शरीर न होता, केवल आत्मा होती तो कितने सुख से यात्रा करती। भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं। कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहां उतरेगा? अस्पताल में या श्मशान में।

VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 40

के कन्धे पर टिकने लगता है। बताइए ऐसी निकटता भारतीय रेलों के अतिरिक्त कहां देखने को मिलेगी? आधी रात को ऊपर की बर्थ पर लेटा यात्री नीचे की बर्थ पर लेटे इस यात्री से पूछता है - यह कौन सा स्टेशन है?

तबीयत होती है कहूं- अबे चुपचाप सो, क्यों डिस्टर्ब करता है? मगर नहीं, वह भारतीय रेल का यात्री है और भारतभूमि पर यात्रा कर रहा है। वह जानना चाहता है कि इस समय एक भारतीय रेल ने कहां तक प्रगति कर ली है? आधी रात के घुप्प अंधेरे में मैं भारतभूमि को पहचानने का प्रयत्न करता हूं। पता नहीं, किस अनजाने स्टेशन के अनचाहे सिग्नल पर भाग्य की रेल रुकी खड़ी है।

ऊपर की बर्थवाला अपने प्रश्न को फिर दोहराता है। मैं अपनी खामोशी को दोहराता हूं। भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं। उत्तेजना के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं। मनुष्य की यही प्रगति है।

भारतीय रेलें आगे बढ़ रही हैं। भारतीय मनुष्य आगे बढ़ रहा है। आपने भारतीय मनुष्य को भारतीय रेल के पीछे भागते देखा होगा। उसे पायदान से लटके, डिब्बे की छत पर बैठे भारतीय रेलों के साथ प्रगति करते देखा होगा। कई बार मुझे लगता है कि भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे हैं। आगे-आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे-पीछे रेल आ रही है।

अगर इसी तरह रेल पीछे आती रही तो भारतीय मनुष्य के पास सिवाय बढ़ते रहने के कोई रास्ता नहीं रहेगा। बढ़ते रहो - रेल में सफर करते, दिन-भर झगड़ते, रात-भर जागते, बढ़ते रहो। रेलनिशात् सर्व भूतानां! जो संयमी होते हैं, वे रात-भर जागते हैं। भारतीय रेलों की यही प्रगति है। जब तक ऐक्सीडेंट न हो, हमें जागते रहना है। ■

फॉर्म -4

(नियम 8 देखिये)

विचार परिक्रमा

1.	प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	शरद गोयल
	क्या भारत का नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	ई 1/4, पांडव नगर, पटपड़गंज, मदर डेयरी के सामने, नई दिल्ली-110092
4.	प्रकाशक का नाम	:	शरद गोयल
	क्या भारत का नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	ई 1/4, पांडव नगर, पटपड़गंज, मदर डेयरी के सामने, नई दिल्ली-110092
5.	संपादक का नाम	:	शरद गोयल
	क्या भारत का नागरिक हैं?	:	हां
	पता	:	ई 1/4, पांडव नगर, पटपड़गंज, मदर डेयरी के सामने, नई दिल्ली-110092
6.	स्वामी का नाम	:	शरद गोयल
	क्या भारत का नागरिक है?	:	हां
	पता	:	ई 1/4 पांडव नगर, पटपड़गंज, मदर डेयरी के सामने, नई दिल्ली-110092

मैं शरद गोयल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

(शरद गोयल)

प्रकाशक

दिनांक : 31 मार्च 2016